By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-3

Topic - Nature and Scope of Political Theory

Class - B.A. Degree - I (Sub.)

Subject - Political Science

Date - 24 July ,2020

By Rahul Kumar Jha.

राजनीतिक सिद्धांत के प्रकृति, क्षेत्र और महत्व :-

किसी भी विषय की प्रकृति से हमारा अभिप्राय होता है उसके मूलभूत, स्वभाविक और सामान्य गुण तथा विशिष्ट तत्व जो उसमें अन्तर्निहित होते है और उसे दूसरे विषयों से अलग करते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक चिंतन में अंतर :- राजनीतिक चिंतन उन सभी गतिविधियों अथवा किसी समुदाय के विशिष्ट गतिविधियों के सिद्धांतों, मूल्यों और विश्वासों का सामान्य चिंतन है होता है जो राज्य की क्रिया-प्रतिक्रिया की गतिविधियों, नीतियों और निर्णयों के प्रति अपने विचार व्यक्त करते है जिनका प्रभाव

हमारे अपने समय के राजनीतिक जीवन पर दिखाई देता है। राजनीतिक चिंतन का कोई स्पष्ट रूप नहीं होता। यह समयबद्ध होता है। समय और परिस्थितियों में परिवर्तन आने से इसमें भी परिवर्तन आ जाता है।

इसके विपरीत, राजनीतिक सिद्धांत किसी एक व्यक्ति का क्रमबद्ध चिन्तन होता है जो विशिष्ट रूप से राज्य अथवा राजनीतिक समस्याओं के बारे में चर्चा करता है। यह चिन्तन कुछ परिकल्पनाओं पर आच्छादित होता है जो तर्क-संगत और युक्तियुक्त हो भी सकते है और नहीं भी, तथा जिनकी भरपूर आलोचना भी की जा सकती है। सिद्धांत राजनीतिक वास्तविकता की व्याख्या करने का एक मॉडल प्रस्तुत करते है जैसा कि सिद्धांतकार उसे ठीक समझता है। परिणामस्वरूप, एक ही युग में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक सिद्धांत समांतर चल सकते है।

राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दार्शनिक:-
दर्शनशास्त्र का दूसरा नाम है 'ज्ञान का विज्ञान' अर्थात इस संसार, व्यक्ति तथा ईश्वर के बारे

में ज्ञान। यह वह ज्ञान है जो किसी भी विषय की सूक्ष्म व्याख्या करने में सक्षम होता है। जब यह ज्ञान राजनीतिक क्षेत्र अर्थात राज्य की ~~व्य~~ व्याख्या करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है तो उसे राजनीतिक दर्शन शास्त्र का नाम दिया जाता है। राजनीतिक दर्शन शास्त्र का संबंध नैतिक राजनीतिक सिद्धांतों से है अर्थात् राजनीतिक दर्शनशास्त्र का संबंध केवल 'क्या है' की ~~व~~ व्याख्या करना नहीं होता बल्कि 'क्या होना चाहिए' की व्याख्या से अधिक होता है।

राजनीतिक दर्शन-शास्त्र और राजनीतिक सिद्धांत में अंतर इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है कि राजनीतिक दार्शनिक राजनीतिक सिद्धांतकार तो हो सकता है परंतु राजनीतिक सिद्धांतकार जरूरी नहीं कि राजनीतिक दार्शनिक भी हो। यद्यपि राजनीतिक सिद्धांत भी उन्हीं विषयों पर विचार करते हैं जिनपर राजनीतिक दर्शनशास्त्र करता है, परंतु सिद्धांत उन विषयों की दार्शनिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टिकोणों से व्याख्या करते हैं।

(CHAPTER CONTINUES.....)